REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 8 | MAY - 2026

"रीवा जिले की सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता : एक अध्ययन"

पुष्पेन्द्र कुमार पटेल
शोधार्थी वाणिज्य, मध्यांचल प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.)

डॉ. महादेव पंडाग्रे
प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.)

सारांश –

एमएसएमई भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में अगरबत्ती, बीड़ी, दोना–पत्तल, मिट्टी के बर्तन, मसाला निर्माण, हस्तकला इत्यादि उद्यमों में संलग्न महिलाओं के जीवन स्तर के समस्याओं का निराकरण करने में मदद मिलेगी, क्योंकि शासकीय योजनाओं का लाभ इन संस्थानों में कार्यरत महिलाओं को नहीं मिल पा रहा है। इस शोध अध्ययन से रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता की आर्थिक स्थिति की खामियों एवं खूबियों को उजागर कर उनके प्रोत्साहन हेतु कारकों को अभिव्यक्त किया जा सकता है ताकि रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों के आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया जा सकेगा, जिससे जिले में इन उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन मिलेगा और इससे जिले की बेरोजगारी में कमी आयेगी, जिले में इन उद्योगों की स्थापना के लिए प्रशिक्षण का भी प्रबंध शासन द्वारा लाभ दिया जा रहा है, जिससे जिले के अधिक से अधिक महिलायें सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों की स्थापना से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्हें प्रारम्भ करने की दृष्टि से आगे आयेंगी, जिससे बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने के साथ–साथ समाज का आर्थिक विकास भी सुनिश्चित होगा। जिले के आर्थिक विकास के साथ–साथ सम्भाग, राज्य एवं देश का विकास भी सुनिश्चित होगा। सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में जिले के प्रमुख परम्परागत उद्योगों की अद्यतन तकनीक को उजागर कर लोगों को इन उद्यमों में काम करने हेतु प्रोत्साहित किया जायेगा जिससे जिले की आर्थिक स्थिति पर बेहतर प्रभाव पड़ेगा।

मुख्य शब्द– सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्यम, महिलाओं की सहभागिता, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, योजना, अर्थव्यवस्था, रीवा जिला आदि।

प्रस्तावना –

सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में से विशेष रूप से लघु उद्यमियों की सहायता करने के उद्देश्य से व्यापक मात्रा में योजनाओं एवं कार्यक्रमों का कार्यान्वयन किया जा रहा है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम नवाचार में वृद्धि देने, रोजगार के मौके उपलब्ध करने तथा आर्थिक विकास को तीव्र गति प्रदान करने में अहम भूमिका निभाते हैं। इन उद्योगों की गहरी जड़ें अध्ययन क्षेत्र में फैली हुयी है, जो क्षेत्रीय विकास एवं वृद्धि में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं। सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्यम आर्थिक सहभागिता तथा उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराकर युवा

वर्ग के व्यक्तियों, महिलाओं तथ वंचित समुदायों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने पर बल दे रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र में इन उद्योगों की वजह से बेरोजगारी को दरों में कमी आयी है व रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। इन उद्योगों को संचालित करने में अक्सर कम औपचारिक शिक्षा, पूंजी एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है, इसलिए वे अधिक व्यापक मात्रा में व्यक्तियों के लिए सुलभ हो रहे हैं। वर्तमान समय में सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिला व्यवसायियों को अपने व्यापार की सम्भावनाओं को उत्तरोत्तर विस्तारित करना सम्भव हो रहा है।

शोध का उद्देश्य –

सामाजिक शोध में प्रत्येक शोध पत्र को प्रस्तुत करने से पहले उससे संबंधित प्रमुख उद्देश्यों का निर्धारण शोधकर्ताओं द्वारा कर लिया जाता है, ताकि शोध कार्य को एक ठोस आधार मिल सके और शोध कार्य के दौरान शोधकर्ता इधर–उधर भटकने से बच जाते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख "रीवा जिले की सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता : एक अध्ययन" नामक शोध शीर्षक पर शोध कार्य करने से पूर्व कुछ प्रमुख उद्देश्यों का निर्धारण कर लिया है, जो क्रमशः निम्नानुसार है–

1. जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता से उनके आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि के विकास में इन उद्योगों के योगदान की सार्थकता को मूल्यांकित करना।
2. सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में अगरबत्ती, बीड़ी, शिल्पकला, दोना–पत्तल बनाना एवं मसाला उद्यम आदि से जुड़े महिलाओं की आर्थिक व सामान्य जीवन स्तर में परिवर्तन लाने में इन उद्योगों की भूमिका का आकलन करना।
3. जिले की महिलाओं की सहभागिता से उन्हें सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों की स्थापना के लिए शिक्षा, रोजगार एवं स्वरोजगार आदि के प्रति जागरूक कर स्वावलम्बी बनाना।
4. सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों के आवासीय क्षेत्रों के आस–पास स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार या राष्ट्रीय नीति के अनुरूप आदर्श वातावरण को स्थापित करना।

उपरोक्त शोध आलेख से संबंधित उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध पत्र को यथासम्भव मानकों के अनुरूप पूर्ण करने का अकादमिक कार्य शोधकर्ता द्वारा किया गया है, जो वर्तमान समसामयिक मानकों के अनुरूप है।

शोध की परिकल्पना –

शोध परिकल्पना उस प्रकश स्तम्भ की भाँति है जो अंधेरे में भटके हुए पथिक को सही पथ दिखाने में सहायक होता है। परिकल्पना रूपी गन्तव्य स्थान को ज्ञात किये बिना लेखन कार्य करना व्यर्थ होता है। प्रस्तुत शोध शीर्षक के संबंध में प्रारम्भिक जानकारी, अध्ययन से प्राप्त द्वितीयक समंकों एवं वास्तविक अनुमानों के आधार पर इस शोध अध्ययन में निम्नांकित परिकल्पनाओं की वास्तवकिता को कसौटी पर परखने का प्रयास किया जायेगा–

1. जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में कार्यरत महिला श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में बदलाव और इन उद्यमों के संचालन में घनिष्ठ संबंध होने का मूल्यांकन करना।
2. रीवा जिले के पारम्परिक सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्यमों एवं महिलाओं के आर्थिक–सामाजिक में संबंध है।
3. जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों के विकास और शासन द्वारा दिये जाने वाले अनुदान/प्रोत्साहन में संबंध है।
4. रीवा जिले के मिट्टी व पीतल के बर्तन, बीड़ी, अगरबत्ती, मसाला उद्योगों को करने वाली महिला समुदाय व इनके समाजार्थिक विकास में घनिष्ठ संबंध है।

उपरोक्तानुसार परिकल्पनाओं को केन्द्र में रखकर प्रस्तुत शोध पत्र को प्राथमिक समंकों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर पूर्ण किया गया है।

शोध प्रविधि –

किसी भी शोध पत्र अथवा शोधकार्य के अध्ययन में अनेक विधियां उसके विषय वस्तु को निर्धारित करती है तथा वैज्ञानिक विश्लेषण करने में सहायक होती है, जिससे शोध अध्ययन की स्पष्टता एवं रोचकता में वृद्धि होती है। इन शोध प्रविधियों के प्रयोग से शोधकर्ताओं नियोजकों एवं अनुसंधानकर्ता को शोध कार्य करने में

सुगमता आती है। अतः प्रस्तावित शोध पत्र के अन्तर्गत रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन की सरलता एवं वैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए शोध विषय से संबंधित प्राथमिक आंकड़ों को संग्रहीत करने के लिए स्थानीय अवलोकन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अनुसूची इत्यादि का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्तर पर संकलित किये गये आंकड़ों का संकलन करने के उपरान्त उन्हें वर्गीकृत कर सारणीयन के रूप में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का चयन करने के लिए जिले के तहसीलों/विकासखण्डों से दैव निदर्शन प्रविधि के माध्यम से कुल 300 महिलाओं से प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिए कार्य योजना प्रस्तावित है। अतएव प्राथमिक स्तर पर संकलित समंकों का सारणीयन कर निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए नवीन तकनीकों के माध्यम से सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। परिकल्पनाओं की सत्यता के मापन के लिए टी–परीक्षण अथवा काई–परीक्षण इत्यादि प्रविधियों में से यथासम्भव प्रविधि का चयन कर सत्यता का परीक्षण किया जायेगा। विषय वस्तु की विश्लेषण एवं तुलना को प्रभावी बनाने के लिए मानचित्र एवं आरेखों का उपयोग भी प्रस्तावित है। द्वितीयक समंकों को शासकीय अभिलेखों, कार्यालयीन रिकार्डों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध पत्रों, दैनिक समाचार पत्रों, जिला गजेटियर एवं पुस्तकों इत्यादि के माध्यम से संग्रहित किया जायेगा। इस प्रकार उपर्युक्त प्रविधियों में से यथासम्भव विधि का प्रयोग कर वास्तविकता का मूल्यांकन किया जायेगा।

विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध प्रत्येक घटकों को दृष्टिगत रखते हुए महिला श्रमिकों के समग्र आर्थिक विकास की संकल्पना को प्रस्तुत किया गया है। शोध प्रबंध के आधार पर रीवा जिले में सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिला की सहभागिता को एक नवीन दिशा तथा नूतन चेतना के मार्ग को प्रशस्त होगा। जिले के प्रशासनिक तंत्र हेतु दिशा–निर्देश के रूप में यह बहुपयोगी सिद्ध होगा, जिससे आधुनिकीकरण एवं आर्थिक विकास के लाभ महिलाओं तक पहुंच सकेगा। तभी जिले में सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में परम्परागत उद्योगों को शोध का प्रमुख आधार बनाया गया है, जिससे जिले से इस व्यवसाय की विलुप्त होती हुई स्थिति को नवीन पद्धतियों/तकनीकों के साथ ऊपर उठाया जा सके तथा इन उद्यमों को जिले, राज्य एवं देश स्तर पर संरक्षण प्रदान कर नवाचार के अन्तर्गत प्रोत्साहित किया जा सकेगा, ताकि इससे जुड़े महिलाओं का समाजार्थिक विकास सम्भव हो सकेगा। वर्तमान समय में राष्ट्र निर्माण में स्वदेशी उद्योगों को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है, इसी भाव से रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन कर अध्ययन क्षेत्र को ऐसे उद्योगों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन देने हेतु आगे आना होगा, तभी जाकर आत्मनिर्भर भारत एवं विकसित भारत की संकल्पना को मूर्त स्वरूप प्रदान किया जा सकेगा।

अध्ययन क्षेत्र की सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्यमों में महिलाओं की सहभागिता का आकलन करने हेतु प्राथमिक स्तर पर इन उद्यमों से महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक विकास दशाओं का मूल्यांकन करने हेतु मौलिक समंकों का संकलन कर तालिका क्रमांक–01 में वर्गीकरण कर प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है–

सारणी क्रमांक–01

सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्यमों से महिलाओं की सामाजिक दशा संबंधी विवरण

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक विकास हो रहा है	187	62.33
2.	महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक विकास नहीं हो रहा है	79	26.33
3.	कुछ कह नहीं सकते	34	11.34
	कुल योग	300	100.00

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित।

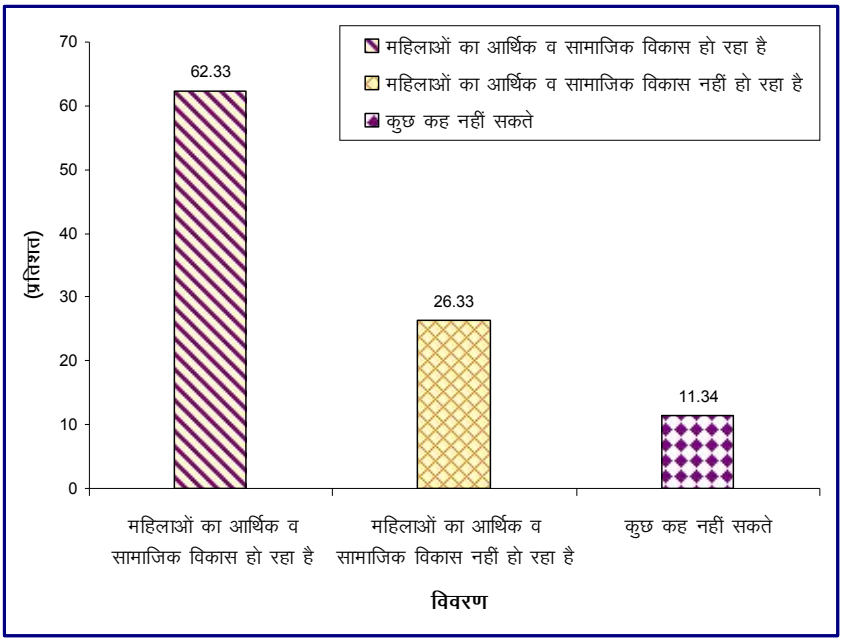

आरेख क्रमांक–01 : सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्यमों से महिलाओं की सामाजिक दशा संबंधी विवरण

उपरोक्त सारणी एवं आरेख के समंकों से स्पष्ट होता है कि रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम व लघु उद्योगों से महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक विकास हो रहा है, जिसे सर्वेक्षित महिला उत्तरदाताओं में से 187 महिलाओं ने सही माना है जिनका प्रतिशत 62.33 है, जबकि वहीं सर्वेक्षित 79 महिलाओं ने बतलाया है कि इन उद्यमों से महिलाओं का समाजार्थिक विकास नहीं हो रहा है जिनका प्रतिशत 26.33 है तथा शेष 34 महिला उत्तरदाताओं ने बतलाया है कि वे इस संबंध में कुछ कह नहीं सकती हैं जिनका प्रतिशत 11.34 है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि रीवा जिले में सूक्ष्म, मध्यम व लघु उद्यमों के संचालन से महिलाओं का आर्थिक विकास हो रहा है, जिससे जिले की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

निष्कर्ष –

रीवा जिले का समुचित विकास, कृषि संसाधनों की कमी, परिवहन मार्गों का अभाव, जल संसाधनों का अभाव, शिक्षा प्रबंधन की कमी तथा प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक उपार्जन की दृष्टि से उचित उपयोग आज भी सम्भव नहीं हो सका है। हमारे सोच पिछड़े, गरीब एवं बेरोजगारों के प्रति आज भी संकुचित है। प्रस्तावित शोध अध्ययन के माध्यम से सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में अगरबत्ती, बीड़ी, दोना–पत्तल, मिट्टी के बर्तन, मसाला निर्माण, हस्तकला इत्यादि उद्यमों में संलग्न महिलाओं के जीवन स्तर के समस्याओं का निराकरण करने में मदद मिल रही, क्योंकि शासकीय योजनाओं का लाभ इन संस्थानों में कार्यरत महिलाओं को नहीं मिल पा रहा है। इस शोध अध्ययन से रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता की आर्थिक स्थिति की खामियों एवं खूबियों को उजागर कर उनके प्रोत्साहन हेतु कारकों को अभिव्यक्त किया गया है, ताकि रीवा जिले के सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों के आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया जा सके, जिससे जिले में इन उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन मिल सकेगा और इससे जिले की बेरोजगारी में कमी आयेगी जिले में इन उद्योगों की स्थापना के लिए प्रशिक्षण का भी प्रबंध शासन द्वारा किये जाने पर बल दिया जा रहा है, जिससे जिले के अधिक से अधिक महिलायें सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों की स्थापना से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्हें प्रारम्भ करने की दृष्टि से आगे आयेंगी, जिससे महिला बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने के साथ–साथ समाज का आर्थिक विकास भी सुनिश्चित हो रहा है। जिले के आर्थिक विकास के साथ–साथ सम्भाग, राज्य एवं देश का विकास भी सुनिश्चित हो रहा है। सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों में जिले के प्रमुख परम्परागत उद्योगों की अद्यतन तकनीक को उजागर कर लोगों को इन उद्यमों में काम करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है जिससे जिले की आर्थिक स्थिति पर बेहतर प्रभाव पड़ रहा है और

रीवा जिला विकास के पथ पर तेजी से अग्रेषित हो रहा है तथा जिले की अर्थव्यवस्था का विकास हो रहा है एवं महिलायें आर्थिक रूप में सशक्त बन रही हैं।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. अग्रवाल, डॉ. पी.के. एवं मिश्र (2010) – अवनीश कुमार, व्यावसायिक संचार, साहित्य भवन आगरा।
2. गुप्ता, संजय (2018) – उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय, एस.वी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा।
3. डॉ. राव एण्ड कोण्डवार (1994) – मध्य प्रदेश का आर्थिक विकास, हिमालय पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. डेनी, एन. राबर्टसन (1989) – उद्योग का नियंत्रण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।
5. कुलश्रेष्ठ, डॉ. आर.एस. (2008) भारत में उद्योगों का संगठन प्रबंध एवं वित्त, साहित्य भवन आगरा।
6. मिश्रा, एस.के. एवं पुरी, बी.के. (1993) – भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।
7. अरोडा, डॉ. रेणु, सूद डॉ. एस.के. एवं कुमार, डॉ. विजय (2004) – उद्यमीकरण के मूल सिद्धान्त, कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली।
8. शर्मा, डॉ. राजेन्द्र (2004) – व्यावसायिक प्रबंध के सिद्धान्त तथा उद्यमिता, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।